Totalbhakti.com

f’ko th dh vkjrh

ऊँ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा।।
ओउम् जय शिव ओंकारा।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रुप निरखता त्रिभुवन मन मोहे।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चंदा भोले शुभकारी।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।
कर मध्ये सुकमंडलु चक्र त्रिशुल धरता।
जगकरता जगहरता जगपालन करता।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।
ब्रह्मा विश्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनो एका।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।
त्रिगुणस्वामिजी की आरति जो कोइ जन गावै।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावै।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा।।

www.Totalbhakti.com